ORIGINAL RESEARCH PAPER

Commerce

पर्यटन का नया आयामः ग्रामीण पर्यटन

KEY WORDS:

अजिता कुमारी

शोधार्थी, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

भारत जिस प्रकार से विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है उसे देखते हुए ग्रामीण पर्यटन खासा लोकप्रिय हो गया है। भारत की विविधताओं से भरी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के कारण लाखों की संख्या में पर्यटक भारत आते हैं। देश में उत्तराखंड, राजस्थान, गोवा, जम्मू कश्मीर, बिहार, उत्तर प्रदेश, केरल, कर्नाटक आदि राज्यों में ग्रामीण पर्यटन तेजी से विकसित हो रहा है। माइक्रोसॉफ्ट के मुखिया तथा विश्व के सबसे अमीर व्यक्ति बिल गेट्स भी बिहार से आकर्षित होकर यहां आए तथा गांवों का दौरा किया। ग्रामीण पर्यटन के तहत पर्यटक देशभर में गांवों में जाकर वहां के स्थानीय लोगों से बातचीत करते हैं और कला, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य की विविधता के बारे में उनसे जानकारी प्राप्त करते हैं।

पिछले कुछ वर्षो से पर्यटन व्यवसाय दर्शनीय और प्राकृतिक स्थलों की सीमाएं लांघकर नए आयामों को छूने लगा है। पर्यटक, विशेषकर विदेशी पर्यटक अपने जीवन को अधिक सुखी, स्वस्थ और समृद्ध बनाने के लिए यात्राा पर निकलते हैं। हमारे देश में स्वास्थ्य पर्यटन खूब फल–फूल रहा है। बड़ी संख्या में विदेशी सैलानी विभिन्न अस्पतालों, प्राकृतिक उपचार, आयुर्वेद एवं योग केन्द्रो में स्वास्थ्य लाभ के उद्देश्य से भारत की ओर रूख कर रहें है। इसी तरह हस्तशिल्प पर्यटन के नाम से नई पर्यटन गतिविधि लोकप्रिय हो रही है जिसमें देशी–विदेशी पर्यटक हस्तशिल्प के विभिन्न रूपों को समझने, देखने, सीखने और हस्तशिल्प उत्पादों के व्यापार के सिलसिले में देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राा करते हैं। पर्यटन के नए आयामों की सूची में सबसे नया नाम ग्रामीण पर्यटन का है जो गांवों को अतुल्य भारत के मानचित्रा पर लाने के अलावा उनके चहुंमखी विकास तथा ग्रामीण स्तर पर रोजगार के नए अवसर जुटाने की दिशा में उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है। ग्रामीण पर्यटन की दिशा में हो रही प्रगति से समूचे पर्यटन उद्योग में एक तरह की ताजगी और आत्मीयता का संचार होता दिखाई दे रहा है।

ग्रामीण पर्यटन का बढ़ता महत्व

हम कह सकते हैं कि ग्रामीण पर्यटन, पर्यटन का एक ऐसा प्रकार है जिसमें नगरों में रहने वाले निवासी, गांव और ग्रामीण जीवन को समझने और उसका आनंद लेने के उद्देश्य से गांवों में जाकर भ्रमण एवं निवास करते हैं। यह ग्रामीण जीवन की कला, संस्कृति तथा परंपराओं से संबंधित होता हैं एवं स्थानीय लोगों को रोजगार तथा आर्थिक विकास का अवसर प्रदान करता है। इसके साथ ही यह प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण में भी सहायता प्रदान करता है। यह पारिस्थितिकी पर्यटन का हिस्सा भी हो सकता है। ग्रामीण **पर्यटन के लिए** विभिन्न बातें आवश्यक है, जैसे–वह स्थान ग्रामीण क्षेत्रा में स्थित हो तथा अग्रलिखित में से कम से कम एक या एक से अधिक स्थितियां उपलब्ध हो, वहां ग्रामीण कार्यपद्धति जैसे कुटीर या छोटे लघु उद्योग, खुला वातावरण, प्रकृति का सानिध्य, धरोहर, परम्पराएं, सामाजिक गतिविधियां इत्यादि हों।

विश्व पर्यटन संघ के अनुसार भारत में 1450 ग्रामीण एवं स्थानीय स्थल ऐसे हैं जहां देश–विदेश के पर्यटक सर्वाधिक आना पसंद करते हैं। इनमें राजस्थान के जैसलमेर में सम के रेतीले टीबे, बस्तर के संथाल, मध्य प्रदेश के गोंडे, असम के बोडो, नीलगिरी तथा चित्राकूट के झरने, मिजोरम का डम्पा अभयारण्य, राजस्थान का सीतामाता अभयारण्य, मणिपुर की लोकटाक झील, केरल की सांप नाव दौड़, पंजाब के दंगल, महाराष्ट्र का गणेश उत्सव, राजस्थान का पुष्कर एवं बीकानेर ऊंट मेला, हरियाणा की सूरजकुण्ड यात्राा, गुजरात में कच्छ का रन, सिक्किम में फूलों की खेती, लेह–लद्दाख का प्राकृतिक जीवन, मध्य प्रदेश में भीम बेटका की आदिमानव गुफाएं इत्यादि मुख्याकर्षण हैं।

भारत जैसे सांस्कृतिक, भौगोलिक विविधता वाले देश में पर्यटन के क्षेत्रा में असीम संभावनाएं हैं। हालांकि इस रास्ते में समस्याएं भी कम नहीं हैं लेकिन ईमानदार प्रयास किए जाएं तो उन पर पार पाना कोई मुश्किल नहीं। हाल में राष्ट्रीय पर्यटन नीति ने जहां इस क्षेत्रा में विकास के विविध फलकों को छुआ है वहीं विभिन्न सामाजिक संगठनों से लेकर कॉरपोरेट जगत तक की उत्साही भागीदारी ने उम्मीदों की नयी रोशनी फैलाई है। फिलहाल, वक्त आ गया है कि देश में पर्यटन की असीम संभावनाओं को भुनाने के लिए इसके विभिन्न अंशधारक एकजुट होकर समेकित प्रयास करें।

शोध समस्या का विवरण

पर्यटन आर्थिक विकास और रोजगार सृजन के लिहाज से एक महत्वपूर्ण क्षेत्रा माना जाता है। दुनिया भर में विदेशी मुद्रा का कमाई करने वाले पांच प्रमुख क्षेत्रों में पर्यटन भी एक है। योजना आयोग (अब नीति आयोग) ने इसे देश में कम दक्ष और अकुशल श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने वाला दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्रा माना है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन की हिस्सेदारी लगभग 6 प्रतिशत है। पर्यटन दूरदराज के और पिछड़े इलाकों में रोजगार सृजन का महत्वपूर्ण साधन है।

केन्द्र सरकार ने पिछले कुछ वर्षो में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए कई कदम उठाए हैं। गांवों में जनजीवन, कला, संस्कृति और परम्पराओं को प्रचारित करने के मकसद से 2002–03 से ग्रामीण पर्यटन की योजना शुरू की गई है। इसका उद्देश्य ग्रामीण हस्तशिल्प और हथकरघा उद्योग तथा प्राकृतिक परिवेश को भी बढ़ावा देना है। इस योजना के तहत 29 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में 186 ग्रामीण पर्यटन परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। इनमें से 56 परियोजनाएं पूर्वोत्तर क्षेत्रा में है। ग्रामीण क्षेत्रों ममें पर्यटन विकास की छोटी परियोजनाओं के लिए 5 लाख रूपये की केन्द्रीय सहायता का प्रावधान हैं 11 वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान ग्रामीण पर्यटन के लिए 55.40 करोड़ रूपये की रकम रखी गई थी। केन्द्र सरकार बड़े पर्यटन स्थलों के विकास के लिए 25 करोड़ रूपये देती है। बड़े सर्किटों के विकास के लिए उसकी ओर से 50 करोड़ रूपये की सहायता दी जाती है। अब तक 27 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में ऐसी 40 बड़ी पर्यटन परियोजनाओं की पहचान की गई है जिनमें से 26 मंजूर भी का जा चुकी है।

12 वीं पंचवर्षीय योजना में ग्रामीण पर्यटन समूह परियोजना का प्रावधान किया गया है। इसके तहत गांवों के समूहों को पर्यटन उत्पादन के तौर पर विकसित किया जाएगा। इस योजना के तहत 35 पर्यटन समूहों की पहचान की गई है जहां ढ़ाचागत विकास के लिए मिशन के रूप में काम किया जाएगा। इन पर्यटन समूहों को सरकारी–निजी भागीदारी के आधार पर विकसित किया जाएगा।

पर्यटन मंत्रालय ने 12वीं योजना के तहत 23 हजार करोड़ रूपये की मांग की है। यह रकम 11 वीं योजना के पांच हजार 156 करोड़ रूपये के आवंटन से 17844 करोड़ रूपये अधिक है। राष्ट्रीय पर्यटन सलाहकार परिषद ने मौजूदा योजना में पर्यटन विकास के लिए एक रणनीति तैयार की है। इसके तहत हर राज्य में चार–चार पर्यटन स्थलों या सर्किटों और दो–दो समूहों की पहचान करने के लिए राष्ट्रीय सलाहकार नियुक्त किए गए है। मौजूदा समय में हमारे देश में ग्रामीण पर्यटन अपने शैशवकाल में है। मगर ग्रामीण क्षेत्रों की विशिष्टताओं को देखते हुए इसके विकास की काफी संभावनाएं है। हमारे देश में हर क्षेत्रा की अलग भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक विरासत, संस्कृति, रिवाज, परम्पराएं, त्योहार, लोककलाएं और शिल्प हैं। हमारे रंग–बिरंगे गांव बड़ी संख्या में विदेशी और देशी सैलानियों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं का दोहन कर गांवों में रोजगार के अवसर बढ़ाने के साथ ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाया जा सकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में, वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य बिहार राज्य में ग्रामीण पर्यटन की समस्याओं और संभावनाओं को प्रकाशित करना रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य

- ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा तथा प्रसांगिकता की व्याख्या करना,
- बिहार राज्य के ग्रामीण पर्यटन स्थलों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करना,
- बिहार में ग्रामीण पर्यटन की वर्तमान दशा की समीक्षा करना,
- बिहार में ग्रामीण पर्यटन की समस्याओं और संभावनाओं की पहचान करना तथा
- समस्याओं/चुनौतियों से निबटने के उपाय सुझाना है।

अध्ययन का औचित्य

अब तक विश्व पर्यटक उद्योग में भारत की हिस्सेदारी बहुत कम रही है। दुनिया भर में पर्यटन से होने वाली आय में भारत की हिस्सेदारी मात्रा 5.72 प्रतिशत है। दुनिया भर में पर्यटकों की आवाजही में भारत की हिस्सेदारी मात्रा 0.64 प्रतिशत हैं 12 वीं योजना के दौरान इसे बढ़ाकर एक प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया है। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए लगभग 12.4 प्रतिशत की सालाना वृद्वि दर हासिल करनी होगी। इस क्षेत्रा में अगले दो बरसों में तकरीबन ढ़ाई करोड़ रोजगार सृजित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस समय पर्यटन से लगभग पांच करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से रोजगार मिला हुआ है। इसके अगले दो बरस में बढ़कर आठ करोड़ रूपये तक पहुंच जाने की संभावना है। एसोचैम द्वारा किए गए सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2019 तक पर्यटन क्षेत्रा की विकास दर 8.8 प्रतिशत हो जाएगी। इस विकास दर की बदौलत अगले 5 वर्ष में भारत पर्यटन के क्षेत्रा में दूसरी सबसे बड़ी ताकत बन जाएगा।

अध्ययन की परिकल्पना

हमारा अध्ययन निम्नांकित प्राक्कल्पनाओं पर आधारित रहाः

1. ग्रामीण पर्यटन को विकसित कर गांव के लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं
2. ग्रामीण पर्यटन देशी और विदेशी मुद्रा सृजन का माध्यम बन सकता है।
3. राज्य में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए आवश्यक आधारभूत संरचना यथा– सड़के तथा परिवहन के साधन की कमी है।

शोध प्रणाली

प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस उद्देश्य से आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए

- प्राथमिक स्रोत एवं
- द्वितीयक स्रोत – दोनों स्रोतों की सहायता ली गई।
- प्रमुखतः द्वितीयक स्रोत के आंकड़ों की सहायता से अध्ययन संभव हुआ। इस हेतु विभिन्न
- पत्रा–पत्रिाकाओं
- पुस्तकें/ग्रंथों
- संदर्भ वार्षिकी
- राज्य/केन्द्र सरकार के रिपोर्ट
- अन्य संगठनों के रिपोर्ट
- बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम, बिहार से प्राप्त सूचनाएँ
- आर्थिक सर्वेक्षण, बिहार सरकार
- संगोष्ठी/सेमिनार के पत्रा
- वेबसाइट पर उपलब्ध सामग्री इत्यादि की सहायता ली गई। आवश्यकतानुसार प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण साक्षात्कार विधि से किया गया। इस तरह एकत्रित आंकड़ों का
- प्रतिशतता
- अनुपात
- समानुपात
- प्रवृति विश्लेषण
- माध्य इत्यादि की सहायता से विश्लेषण एवं निर्वचन कार्य किया गया। आवश्यकतानुसार, अध्ययन में सूचनाओं को
- दण्डालेख

- आयत चित्रा तथा
- वृत चार्ट की सहायता से चित्राात्मक प्रस्तुति भी की गई।

निष्कर्ष:

ग्रामीण पर्यटन वास्तव में ग्रामीण विकास की महत्वपूर्ण कुंजी साबित हो रहा है। आज के सूचना क्रांति के युग में संचार तंत्रा के विस्तार के बिना अन्य पर्यटन सुविधाएं फीकी है। संयोगवश सरकार ने पहले से ही गांवों में सूचना–तंत्रा के विस्तार की महत्वाकांक्षी योजनाएं चला रखी है। ब्राडबैंड, मोबाइल, टेलीविजन, एफ.एम. रेडियो तथा अन्य संचार सुविधाओं की पहुंच ने गांवों में पर्यटकों का आना–जाना और रहना सुविधाजनक बना दिया है। इस अध्याय के अन्तर्गत पर्यटन की अवधारणा एवं प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है।

सन्दर्भ:

1. कुमारी, सबिता (2015) पर्यटकों को आकर्षित करता ग्रामीण पर्यटन, कुरूक्षेत्रा, वर्ष 61, अंक 8, जून, पृष्ठ 35
2. 2011 की जनगणना के आंकड़े, भारत सरकार
3. द्विवेदी, धीप्रज्ञ (2017), ग्रामीण पर्यटन और स्वच्छता, कुरूक्षेत्रा, वर्ष 64, अंक 2, दिसम्बर, पृष्ठ 45
4. शर्मा, कंचन (2015), भारत में पर्यटन विकासः चुनौतियां व संभावनाएं, योजना, वर्ष 59, अंक 5, मई, पृष्ठ 21
5. कटारिया, सुरेन्द्र (2016), राष्ट्रीय जुड़ाव में ग्रामीण पर्यटन का योगदान, कुरूक्षेत्रा, वर्ष 62, अंक 4, फरवरी, पृष्ठ 43
6. सेतिया, सुभाष (2015), गांवों में उभरता अतुल्य भारत, कुरूक्षेत्रा, वर्ष 61, अंक 8, जून, पृष्ठ 40
7. झा, गिरीन्द्र नाथ (2015), ग्राम्य पर्यटन के खुलते दरवाजे, योजना, वर्ष 59, अंक 5, मई, पृष्ठ 53
8. 11 वीं पंचवर्षीय योजना का दस्तावेज पत्रा, भारत सरकार
9. एसोचैम की सर्वेक्षण रिपोर्ट – **www.assocham.org**